कक्षा - छठी, विषय - हिन्दी

अधिन्यास-3 (पाठ 3,4 व्याकरण)

प्र.1) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित संज्ञा शब्द के भेद लिखिए -

क. भारत में अनेक पवित्र नदियाँ बहती हैं |

ख. हरियाणा राज्य में अनेक औद्यौगिक नगर हैं |

ग. सेना के जवान कदम-ताल कर रहे हैं |

घ. बुढापा प्राय: बचपन का पुनरागमन हुआ करता है |

ङ. संकट के समय बुद्धिमानी से कार्य करना चाहिए |

च. आगरा का ताजमहल वास्तुकला का अनन्यतम उदाहरण है |

छ. पशु मैदान में घास चर रहे हैं |

ज. कोयले का प्रयोग ईंधन के रूप में होता है|

झ. वर्षा के बाद चारों ओर हरियाली छा गई |

ञ. सबसे प्रेम करो, घृणा नहीं |

प्र.2) निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए -

क. अमीर -

ख. सुखी -

ग. सुंदर -

घ. वीर -

ङ. बच्चा -

च. मीठा -

छ. बूढा -

ज. आलसी -

झ. चतुर -

प्र.3) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित सर्वनाम शब्द के भेद लिखिए-

क. यह खिलौना राजेश का है |

ख. यह बात किसी से न कहना |

ग. जो जैसा करेगा,वैसा भरेगा |

घ. मैं अपने आप घर चला जाऊँगा |

ङ. वहाँ <u>कौन</u> खड़ा है ?

च. <u>वह</u> मेरा भाई है |

छ. वह <u>आप</u> ही आ जाएगा |

ज. <u>आप</u> कहाँ जा रहे हैं ?

झ. <u>ये</u> सलीम के घर की पुस्तकें हैं |

ञ. वह <u>स्वयं</u> भोजन बना लेगी |

प्र.4) **संवाद लेखन** - संवाद का अभिप्राय 'बातचीत' अथवा 'वार्तालाप' से है । यह अभिव्यक्ति के मौखिक एवं लिखित दोनों रूपों में मिलता है ।प्रभावशाली संवाद बोलना अथवा लिखना भी एक कला है । संवाद लेखन करते समय कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए -

- संवाद दिए गए विषय से संबंधित हों ।
- संवाद छोटे, स्वाभाविक और रोचक हों ।
- संवादों में प्रवाह तथा उनका आपस में संबंध होना चाहिए ।
- भाषा सदा विषय और पात्रानुकूल हो ।
- औपचारिकता अपेक्षित नहीं है ।
- आत्मीयता लाने के लिए उचित संबोधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए ।
- पात्रों के हाव-भाव, विचार, विभिन्न मुद्राओं आदि को कोष्ठक में लिख देना चाहिए ।
- उचित विराम चिह्नों का प्रयोग होना चाहिए ।

प्र.5) ग्रीष्म ऋतु का प्रकोप बढ़ गया है और मोहल्ले में बार-बार बिजली चली जाती है | इस समस्या पर दो मित्रों के बीच होने वाले संवाद लिखिए |

प्र.6) 'जल ही जीवन है'- उक्ति की व्याख्या करते हुए स्पष्ट कीजिए कि हमें जल का संरक्षण किस प्रकार करना चाहिए |

(संकेत बिंदु : पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन संभव ,जल जीवन का अनमोल है रत्न , इसे बचाने का करो जतन, प्रकृति का दिया हुआ उपहार , फव्वारे से नहाने के बजाए बाल्टी और मग का इस्तेमाल करना, जमीन में जल का स्तर गिरता, घर के बगीचे में पानी देते समय पाईप की बजाय फव्वारे का प्रयोग करना, ज्यादा से ज्यादा पेड़-पौधे लगायें जिससे वर्षा की कमी न हो।)